13-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - तुमने दु:ख सहन करने में बहुत टाइम वेस्ट किया है, अब दुनिया बदल रही है, तुम बाप को याद करो, सतोप्रधान बनो तो टाइम सफल हो जायेगा"

प्रश्नः- 21 जन्मों के लिए लॉटरी प्राप्त करने का पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर:- 21 जन्मों की लॉटरी लेनी है तो मोहजीत बनो। एक बाप पर पूरा-पूरा कुर्बान जाओ। सदा यह स्मृति में रहे कि अब यह पुरानी दुनिया बदल रही है, हम नई दुनिया में जा रहे हैं। इस पुरानी दुनिया को देखते भी नहीं देखना है। सुदामा मिसल चावल मुट्ठी सफल कर सतयुगी बादशाही लेनी है।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ

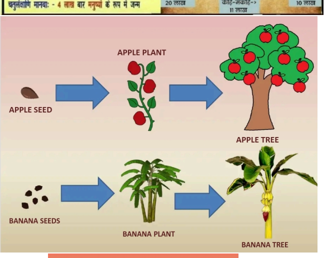

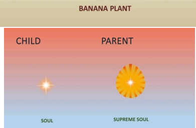

समझाते हैं, यह तो बच्चे समझते हैं, रूहानी बच्चे माना आत्मायें। रूहानी बाप माना आत्माओं का बाप। इसको कहा जाता है आत्माओं और परमात्मा का मिलन। यह मिलन होता ही है एक बार। यह सब बातें तुम बच्चे जानते हो। यह है विचित्र बात। विचित्र बाप विचित्र आत्माओं को समझाते हैं। वास्तव में आत्मा विचित्र है, यहाँ आकर चित्रधारी बनती है। चित्र से पार्ट बजाती है। आत्मा तो सबमें है ना। Mind well जानवर में भी आत्मा है। 84 लाख कहते हैं, उसमें तो सब जानवर आ जाते हैं ना। ढेर जानवर आदि हैं, बाप समझाते हैं इन बातों में टाइम वेस्ट नहीं करना है। सिवाए इस ज्ञान के मनुष्यों का टाइम वेस्ट होता रहता है। इस समय बाप तुम बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं फिर आधाकल्प तुम प्रालब्ध भोगते हो। वहाँ तुमको कोई तकलीफ नहीं होती है। तुम्हारा टाइम वेस्ट होता ही है दु:ख सहन करने में। यहाँ तो दु:ख ही दु:ख है इसलिए सब बाप को याद करते हैं कि हमारा दु:ख में टाइम वेस्ट होता है, इससे निकालो। सुख में कभी टाइम वेस्ट नहीं कहेंगे। यह भी तुम

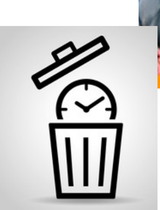

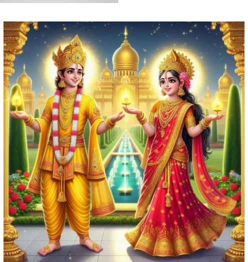

समझते हो - इस समय मनुष्य की कोई वैल्यु नहीं है। मनुष्य देखो अचानक ही मर पड़ते हैं। एक ही तूफान में कितने मर जाते हैं। रावण राज्य में मनुष्य की कोई वैल्यु नहीं है। अभी बाप तुम्हारी कितनी वैल्यु बनाते हैं। वर्थ नाट ए पेनी से वर्थ पाउण्ड बनाते हैं। गाया भी जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक। इस समय मनुष्य कौड़ी पिछाड़ी लगे हुए हैं। करके लखपति, करोड़पति, पद्मपति बनते हैं, उन्हों की सारी बुद्धि उसमें ही रहती है। उनको कहते हैं - यह सब भूल एक बाप को याद करो परन्तु मानेंगे ही नहीं। उनकी बुद्धि में बैठेगा, जिनकी बुद्धि में कल्प पहले भी बैठा होगा। नहीं तो कितना भी समझाओ, कभी बुद्धि में बैठेगा नहीं। तुम भी नम्बरवार जानते हो कि यह दुनिया बदल रही है। बाहर में भल तुम लिख दो कि दुनिया बदल रही है फिर भी समझेंगे नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ। अच्छा, कोई समझ जाए फिर उनको समझाना पड़े - बाप को याद करो, सतोप्रधान बनो। नॉलेज तो बहुत सहज है। यह सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी......। अभी यह दुनिया

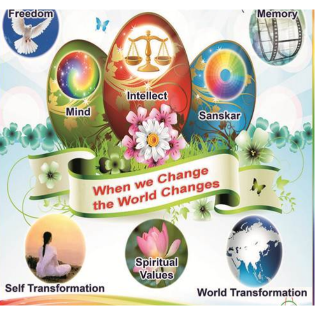

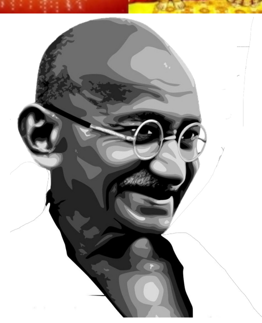

बदल रही है, बदलाने वाला एक ही बाप है। यह भी तुम यथार्थ रीति जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। माया पुरुषार्थ करने नहीं देती फिर समझते हैं यह भी ड्रामा अनुसार इतना पुरुषार्थ नहीं चलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि श्रीमत से हम अपने लिए इस दुनिया को बदला रहे हैं। श्रीमत है ही एक शिवबाबा की। शिवबाबा, शिवबाबा कहना तो बहुत सहज है और कोई न शिवबाबा को, न वर्से को जानते हैं। बाबा माना ही वर्सा। शिवबाबा भी सच्चा चाहिए ना। आजकल तो मेयर को भी फादर कह देते हैं। गांधी को भी फादर कहते हैं, कोई को फिर जगद्गुरू कह देते हैं। अब जगत माना सारी सृष्टि का गुरू। वह कोई मनुष्य हो कैसे सकता! जबकि पतित-पावन सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। बाप तो है निराकार फिर कैसे लिबरेट करते हैं? दुनिया बदलती है तो जरूर एक्ट में आयेंगे तब तो पता पड़ेगा। ऐसे नहीं कि प्रलय हो जाती है, फिर बाप नई सृष्टि रचते हैं। शास्त्रों में दिखाया है बहुत बड़ी प्रलय होती है, फिर पीपल के पत्ते पर कृष्ण आता

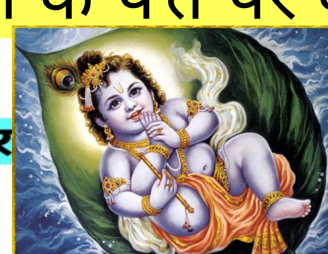

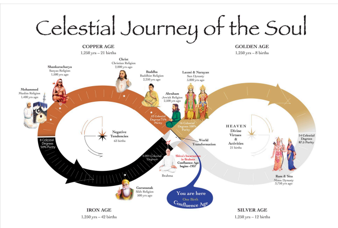

है। परन्तु बाप समझाते हैं ऐसे तो है नहीं। गाया जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट तो प्रलय हो न सके। तुम्हारे दिल में है कि अभी यह पुरानी दुनिया बदल रही है। यह सब बातें बाप ही आकर समझाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण हैं नई दुनिया के मालिक। तुम चित्रों में भी दिखलाते हो कि पुरानी दुनिया का मालिक है रावण। राम राज्य और रावण राज्य गाया जाता है ना। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं कि बाबा पुरानी आसुरी दुनिया को खत्म कर नई दैवी दुनिया स्थापन करा रहे हैं। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोई विरला ही समझते हैं। वह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो जो अच्छे पुरुषार्थी हैं उनको बड़ा अच्छा नशा रहता है। याद के पुरुषार्थी को रीयल नशा चढ़ेगा। 84 के चक्र की नॉलेज समझाने में इतना नशा नहीं चढ़ता जितना याद की यात्रा में चढ़ता है। मूल बात है ही पावन बनने की। पुकारते भी हैं - आकर पावन बनाओ। ऐसा नहीं पुकारते कि आकर विश्व की बादशाही दो। भक्ति मार्ग में कथायें भी कितनी सुनते हैं। सच्ची-सच्ची सत्य नारायण की कथा तो

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥ Adhyay 7

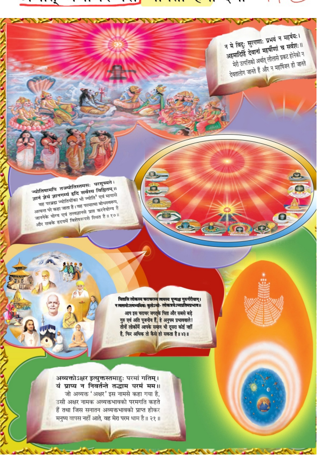

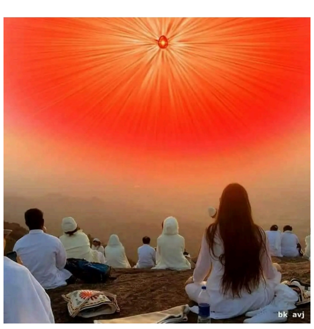

यह है। वह कथायें तो जन्म-जन्मातर सुनते-सुनते नीचे ही उतरते आये हो। भारत में ही यह कथायें सुनने का रिवाज है, और कोई खण्ड में कथायें आदि नहीं होती। भारत को ही रिलीजस मानते हैं। ढेर के ढेर मन्दिर भारत में हैं। क्रिश्चियन की तो एक ही चर्च होती है। यहाँ तो किस्म-किस्म के ढेर मन्दिर हैं। वास्तव में एक ही शिवबाबा का मन्दिर होना चाहिए। नाम भी एक का होना चाहिए। यहाँ तो ढेर नाम हैं। विलायत वाले भी यहाँ मन्दिर देखने आते हैं। बिचारों को यह पता नहीं कि प्राचीन भारत कैसा था? 5 हज़ार वर्ष से तो पुरानी कोई चीज़ होती नहीं। वह तो समझते हैं कि लाखों वर्ष की पुरानी चीज़ मिली। बाप समझाते हैं यह मन्दिर में चित्र आदि जो बने हैं उनको 2500 वर्ष ही हुए हैं, पहले-पहले शिव की ही पूजा होती है। वह है अव्यभिचारी पूजा। वैसे ही अव्यभिचारी ज्ञान भी कहा जाता है। पहले अव्यभिचारी पूजा, फिर है व्यभिचारी पूजा। अब तो देखो पानी, मिट्टी की पूजा करते रहते हैं।

Point to be Noted

13-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अभी बेहद का बाप कहते हैं तुमने कितना धन भक्ति मार्ग में गँवाया है। कितने अथाह शास्त्र, अथाह चित्र हैं। गीतायें कितनी ढेर की ढेर होंगी। इन सब पर खर्चा करते-करते देखो तुम क्या हो गये हो। कल तुमको डबल सिरताज बनाया था फिर तुम कितने कंगाल हो गये हो। कल की ही तो बात है ना। तुम भी समझते हो बरोबर हमने 84 का चक्र लगाया है। अभी हम फिर से यह बन रहे हैं। बाबा से वर्सा ले रहे हैं। बाबा घड़ी-घड़ी ताकीद करते (पुरुषार्थ कराते) हैं, गीता में भी अक्षर है मनमना-भव। कोई-कोई अक्षर ठीक हैं। 'प्राय:' कहा जाता है ना, यानि देवी-देवता धर्म है नहीं, बाकी चित्र हैं। तुम्हारा यादगार देखो कैसे अच्छा बनाया हुआ है। तुम समझते हो अभी हम फिर से स्थापना कर रहे हैं। फिर भक्ति मार्ग में हमारे ही एक्यूरेट याद-गार बनेंगे। अर्थक्वेक आदि होती है, उसमें सब खत्म हो जाता है। फिर वहाँ सब तुम नया बनायेंगे। हुनर तो वहाँ रहता है ना। हीरे काटने का भी हुनर (कला) है। यहाँ भी हीरों को काटते हैं फिर बनाते हैं। हीरे काटने वाले भी बड़े

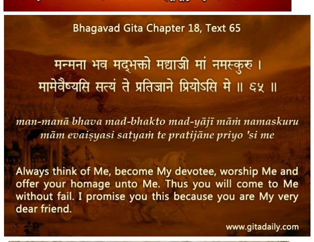

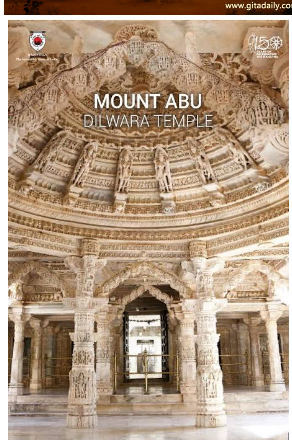

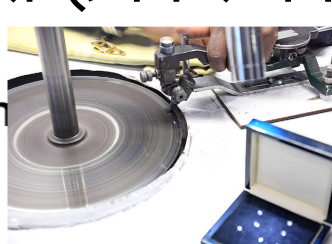

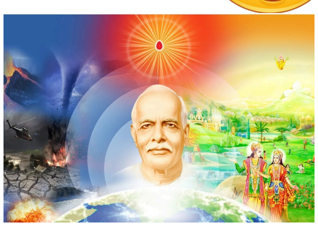

एक्सपर्ट होते हैं। वह फिर वहाँ जायेंगे। वहाँ यह सब हुनर जायेगा। तुम जानते हो वहाँ कितना सुख होगा। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था ना। नाम ही है स्वर्ग। 100 परसेन्ट सालवेन्ट। अभी तो है इनसालवेन्ट। भारत में जवाहरात का बहुत फैशन है, जो परम्परा चला आता है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। तुम जानते हो यह दुनिया बदल रही है। अब स्वर्ग बन रहा है, उसके लिए हमको पवित्र जरूर बनना है। दैवी गुण भी धारण करने हैं इसलिए बाबा कहते हैं चार्ट जरूर लिखो। हम आत्मा ने कोई आसुरी एक्ट तो नहीं किया? अपने को आत्मा पक्का समझो। इस शरीर से कोई विकर्म तो नहीं किया? अगर किया तो रजिस्टर खराब हो जायेगा। यह है 21 जन्मों की लॉटरी। यह भी रेस है। घोड़े की दौड़ होती है ना। इसको कहते हैं राजस्व अश्वमेध........ स्वराज्य के लिए अश्व यानी तुम आत्माओं को दौड़ी लगानी है। अब वापिस घर जाना है। उसको स्वीट साइलेन्स होम कहा जाता है। यह अक्षर तुम अभी सुनते हो। अब बाप कहते हैं बच्चे खूब मेहनत करो। राजाई

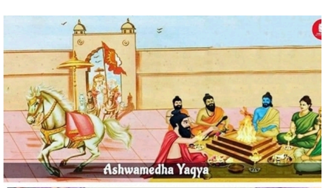

feel the force

स्व-दर्शन

मिलती है, कम बात थोड़ेही है। मैं आत्मा हूँ, हमने इतने जन्म लिए हैं। अब बाप कहते हैं तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए। अब फिर पहले नम्बर से शुरू करना है। नये महलों में जरूर बच्चे ही बैठेंगे। पुराने में तो नहीं बैठेंगे। ऐसे तो नहीं, खुद पुराने में बैठे और नये में किराये वालों को बिठायेंगे। तुम जितनी मेहनत करेंगे, नई दुनिया के मालिक बनेंगे। नया मकान बनता है तो दिल होती है पुराने को छोड़ नये में बैठें। बाप बच्चों के लिए नया मकान बनाते ही तब हैं जब पहला मकान पुराना होता है। वहाँ किराये पर देने की तो बात ही नहीं। जैसे वो लोग मून पर प्लाट लेने की कोशिश करते हैं, तुम फिर स्वर्ग में प्लाट ले रहे हो। जितना-जितना ज्ञान और योग में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे। यह है राजयोग, कितनी बड़ी राजाई मिलेगी। बाकी यह जो मून आदि पर प्लाट ढूँढते रहते हैं वह सब व्यर्थ है। यही चीज़ें जो सुख देने वाली हैं वही फिर विनाश करने, दु:ख देने वाली बन जायेंगी। आगे चलकर लश्कर आदि सब कम हो जायेगा। बॉम्ब्स से ही फटाफट काम होता जायेगा। यह ड्रामा बना हुआ है, समय

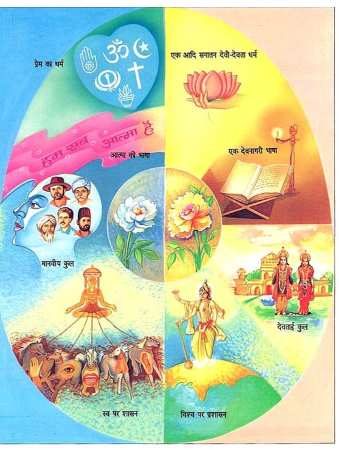

अब दिलों की भाषा, प्रेम का धर्म और आत्मा का स्वयं पर शासन।
फिर होगा एक धर्म, एक भाषा, एक कुल और विश्व पर एक प्रशासन॥

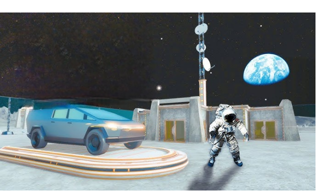

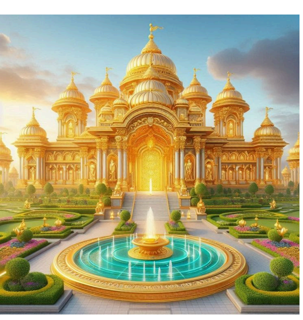

Shiv भगवान उवाच:

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

पर अचानक विनाश होता है। फिर सिपाही आदि भी मर जाते हैं। तुम अब फरिश्ते बन रहे हो। तुम जानते हो हमारे खातिर विनाश होता है। ड्रामा में पार्ट है, पुरानी दुनिया खलास हो जाती है। जो जैसा कर्म करते हैं ऐसा तो भोगना है ना। अब समझो संन्यासी अच्छे हैं, जन्म तो फिर भी गृहस्थियों पास लेंगे ना। श्रेष्ठ जन्म तो तुमको नई दुनिया में मिलना है, फिर भी संस्कार अनुसार जाकर वह बनेंगे। तुम अभी संस्कार ले जाते हो नई दुनिया के लिए। जन्म भी जरूर भारत में लेंगे। जो बहुत अच्छे रिलीजस माइन्डेड होंगे उनके पास जन्म लेंगे क्योंकि तुम कर्म ही ऐसे करते हो। जैसे-जैसे संस्कार, उस अनुसार जन्म होता है। तुम बहुत ऊंच कुल में जाकर जन्म लेंगे। तुम्हारे जैसा कर्म करने वाला तो कोई होगा नहीं। जैसी पढ़ाई, जैसी सर्विस, वैसा जन्म। मरना तो बहुतों को है। पहले रिसीव करने वाले भी जाने हैं। बाप समझाते हैं अब यह दुनिया बदल रही है। बाप ने तो साक्षात्कार कराया है। बाबा अपना भी मिसाल बताते हैं। देखा 21 जन्मों के लिए राजाई मिलती

समझा?

How Great we are...!

कहावतें और कहानियाँ 23

8. **अल्लिफ को अल्लाह मिला, बे को मिली झूठी बादशाही।
आई तार अल्लिफ को, हुआ रेल का राही।**
वाराणसी में जब दादा को भविष्य में होने वाले महाविनाश का साक्षात्कार हुआ तब उनका दुनियावी वैभवों और अपने व्यवसाय से मन उठ गया। दादा ने अपने भागीदार से छुट्टी माँगी और जो भी वह ठीक समझे, वैसा ही हिसाब करने के लिए कहा। उस समय दादा जी ने अपने घर में एक तार दिया जिसमें उपरोक्त पंक्तियाँ लिखी थीं। यहाँ अल्लिफ का अर्थ पहला व्यक्ति अर्थात् दादा है और बे उनके भागीदार का वाचक है। दादा को परमात्मा मिला, भागीदार को पैसा मिला। दादा को चिट्ठी आयी और वे रेल में अपने लौकिक काका की अन्तिम क्रिया के लिए रवाना हुए।

है, उसके आगे यह 10-20 लाख क्या हैं। अल्फ को मिली बादशाही, बे को मिली गदाई। भागीदार को कह दिया जो चाहिए सो लो। कोई भी तकलीफ नहीं हुई। बच्चों को भी समझाया जाता है - बाबा से तुम क्या लेते हो? स्वर्ग की बादशाही। जितना हो सके सेन्टर्स खोलते जाओ। बहुतों का कल्याण करो। तुम्हारी 21 जन्मों की कमाई हो रही है। यहाँ तो लखपति, करोड़पति बहुत हैं। वह सब हैं बेगर्स। तुम्हारे पास आयेंगे भी बहुत। प्रदर्शनी में कितने आते हैं, ऐसा मत समझो प्रजा नहीं बनती है। प्रजा बहुत बनती है। अच्छा-अच्छा तो बहुत कहते हैं परन्तु कहते हमको फुर्सत नहीं। थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जायेंगे। अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता है। बाबा का परिचय देना कोई कम बात थोड़ेही है। कोई-कोई के रोमांच खड़े हो जायेंगे। अगर ऊंच पद पाना होगा तो पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। बाबा कोई से धन आदि तो लेंगे नहीं। बच्चों की बूंद-बूंद से तलाब होता है। कोई-कोई एक रूपया भी भेज देते हैं। बाबा एक ईट लगा दो। सुदामा की मुट्ठी चावल का

Points: ज्ञान योग धार M.imp.

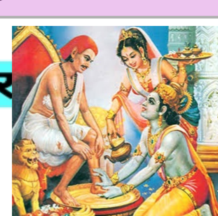

गायन है ना। बाबा कहते हैं तुम्हारे तो यह हीरे-जवाहर हैं। हीरे जैसा जन्म सबका बनता है। तुम भविष्य के लिए बना रहे हो। तुम जानते हो यहाँ इन आंखों से जो कुछ देखते हैं, यह पुरानी दुनिया है। यह दुनिया बदल रही है। अभी तुम अमरपुरी के मालिक बन रहे हो। मोहजीत जरूर बनना पड़े।

याद करो...

अपना वायदा...

तुम कहते आये हो कि बाबा आप आयेंगे तो हम कुर्बान जायेंगे, सौदा तो अच्छा है ना। मनुष्य थोड़ेही जानते हैं, सौदागर, रत्नागर, जादूगर नाम क्यों पड़ा है। रत्नागर है ना, अविनाशी ज्ञान रत्न एक-एक अमूल्य वर्शन्स हैं। इस पर रूप-बसन्त की कथा है ना। तुम रूप भी हो, बसन्त भी हो। अच्छा!

Story on page-18

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

13-11-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अब इस शरीर से कोई भी विकर्म नहीं करना है। ऐसी कोई आसुरी एक्ट न हो जिससे रजिस्टर खराब हो जाए।

2) एक बाप की याद के नशे में रहना है। पावन बनने का मूल पुरुषार्थ जरूर करना है। कौड़ियों पिछाड़ी अपना अमूल्य समय बरबाद न कर श्रीमत से जीवन श्रेष्ठ बनानी है।

In connection with वरदान

10-08-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 31-10-06 मधुबन

Repeat it again & Again for At least 7 days

चाहिए ना, वही स्व प्रति पुरुषार्थ बहुत टाइम किया। कैसे पाण्डव! पसन्द है? तो कल से क्या करेंगे? कल से ही शुरू करेंगे या अब से? अब से संकल्प करो - "मेरा समय, संकल्प विश्व की सेवा प्रति है।" इसमें स्व का ऑटोमेटिक हो ही जायेगा, रहेगा नहीं, बढ़ेगा। क्यों? किसी को भी आप उसकी आशायें पूरी करेंगे, दु:ख के बजाए सुख देंगे, निर्बल आत्माओं को शक्ति देंगे, गुण देंगे, तो वह कितनी दुआयें देंगे। और सबसे दुआयें लेना यही आगे बढ़ने का सबसे सहज साधन है। चाहे भाषण

Today's ★★ वरदान ★★

Why it is so..?
Mechanism Explained

सेवा

M.imp.

Method/Process/Instrument

वरदान:- स्वयं को विश्व सेवा प्रति अर्पित कर माया को दासी बनाने वाले सहज सम्पन्न भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement

अब अपना समय, सर्व प्राप्तियां, ज्ञान, गुण और शक्तियां विश्व की सेवा अर्थ समर्पित करो।

जो संकल्प उठता है चेक करो कि विश्व सेवा प्रति है।

Advantages:-

ऐसे सेवा प्रति अर्पण होने से स्वयं सहज सम्पन्न हो जायेंगे। सेवा की लगन में छोटे बड़े पेपर्स या परीक्षायें स्वत: समर्पण हो जायेंगी।

फिर माया से घबरायेंगे नहीं, सदा विजयी बनने की खुशी में नाचते रहेंगे। माया को अपनी दासी अनुभव करेंगे।

स्वयं सेवा में सरेन्डर होंगे तो माया स्वत: सरेन्डर हो जायेगी।

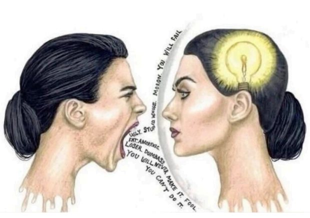

स्लोगन:-अन्तर्मुखता से मुख को बन्द कर दो तो क्रोध समाप्त हो जायेगा।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

अशरीरी व विदेही स्थिति का अभ्यास बढ़ाओ

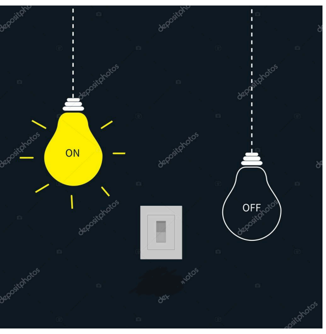

जैसे एक सेकेण्ड में स्वीच आन और आफ किया जाता है,

ऐसे ही एक सेकेण्ड में शरीर का आधार लिया और एक सेकेण्ड में शरीर से परे अशरीरी स्थिति में स्थित हो गये।

अभी-अभी शरीर में आये, अभी-अभी अशरीरी बन गये, आवश्यकता हुई तो शरीर रूपी वस्त्र धारण किया, आवश्यकता न हुई तो शरीर से अलग हो गये। यह प्रैक्टिस करनी है, इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।

फाइनल पेपर

Definition of एकरस अर्थात् एक ही सम्पन्न मूड में रहने वाला। मूड भी बदली न हो। बापदादा वतन से देखते हैं, कई बच्चों के मूड बहुत बदलते हैं। कभी आश्चर्यवत की मूड, कभी क्वेश्चन मार्क की मूड। कभी कनफ्यूज की मूड। कभी टेन्शन,

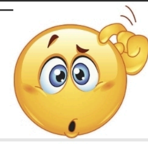

m.m.m....imp.

कभी अटेन्शन का झूला तो नहीं झूलते? मधुबन से प्रालब्धी स्वरूप में जाना है। बार-बार पुरुषार्थ कहाँ तक करते रहेंगे। जो बाप वह बच्चा। बाप की मूड आफ होती है क्या! अभी तो बाप समान बनना है। मास्टर हैं ना। मास्टर तो बड़ा होना चाहिए। कम्पलेन्ट्स् सब खत्म हुई? वास्तव में बात होती है छोटी। लेकिन सोच-सोचकर छोटी बात को बड़ा कर देते हो। सोचने की खातिरी से वह बात छोटी से मोटी बन जाती। सोचने की खातिरी नहीं करो। यह क्यों आया, यह क्यों हुआ! पेपर आया है तो उसको (solve) करना है। पेपर क्यों आया यह क्वेशचन होता है क्या? वेस्ट और बेस्ट सेकेण्ड में जज करो और सेकेण्ड में समाप्त करो। वेस्ट है तो आधाकल्प के लिए वेस्ट पेपर बाक्स में उसको डाल दो। वेस्ट पेपर बाक्स बहुत बड़ा है। जज बनो, वकील नहीं बनो। वकील छोटे केस को भी लम्बा कर देते हैं। और जज सेकेण्ड में हाँ वा ना की जजमेंट कर देता है। वकील बनते हो तो काला कोट आ जाता है। है एक सेकेण्ड की जजमेंट। यह बाप का गुण है वा नहीं। नहीं है तो वेस्ट पेपर बाक्स में डाल दो। अगर बाप का गुण है तो तो बेस्ट के खाते में जमा करो। बापदादा का सैम्पुल तो सामने है ना। कापी करना अर्थात् फालो करना। कोई नया मार्ग नहीं बनाना है। वह स्वरूप बनना है। सब विदेशी 100 परसेन्ट प्रालब्ध पा रहे हो! संगमयुगी प्रालब्ध है - 'बाप समान'। भविष्य प्रालब्ध है 'देवता पद'। तो बाप समान बन बाप के साथ-साथ उसी स्टेज पर बैठने का कुछ समय तो अनुभव करेंगे ना। कोई भी राजा तख्त पर बैठते हैं, कुछ समय तो बैठेगा ना। ऐसे तो नहीं अभी-अभी बैठा और अभी-अभी उतरा। तो संगमयुग की प्रालब्ध है - बाप समान स्टेज अर्थात् सम्पन्न स्टेज के तख्तनशीन बनना। यह प्रालब्ध भी तो पानी है ना। और बहुत समय पानी है। बहुत समय के संस्कार अभी भरने हैं। सम्पन्न जीवन है। सम्पन्न की सिर्फ कुछ घड़ियाँ नहीं हैं। लेकिन जीवन है। फरिश्ता जीवन है, योगी जीवन है। सहज जीवन है। जीवन कुछ समय की होती है, अभी-अभी जन्मा अभी गया, वह जीवन नहीं कहेंगे? कहते हो पा लिया, तो क्या पा लिया? सिर्फ उतरना चढ़ना पा लिया! मेहनत पा लिया! प्रालब्ध को पा लिया! बाप

Simple Math..

Most imp

पुछो अपने आप से...

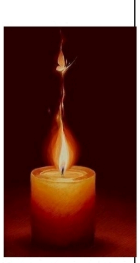

समान जीवन को पा लिया। मेहनत कब तक करेंगे। आधाकल्प अनेक प्रकार की मेहनत की। गृहस्थ व्यवहार, भक्ति समस्यायें, कितनी मेहनत की। संगमयुग तो है मुहब्बत का युग। मेहनत का युग नहीं। मिलन का युग है। शमा और परवाने के समाने का युग है। नाम मेहनत कहते हो लेकिन मेहनत है नहीं। बच्चा बनना मेहनत होती है क्या। वर्से में मिला है कि मेहनत में मिला है। बच्चा तो सिर का ताज होता है। घर का श्रृंगार होता है। बाप का बालक सो मालिक होता है। तो मालिक फिर नीचे क्यों आते। आपके नाम देखो कितने ऊंचे हैं। कितने श्रेष्ठ नाम हैं। तो नाम और काम एक हैं ना। सदा बाप के साथ श्रेष्ठ स्टेज पर रहो। असली स्थान तो वही है। अपना स्थान क्यों छोड़ते हो? असली स्थान को छोड़ना अर्थात् भिन्न-भिन्न बातों से भटकना। आराम से बैठो। नशे से बैठो। अधिकार से बैठो।

12/11/25

(27.03.1981)

8.2.6 याद में रमणीकता लाओ :

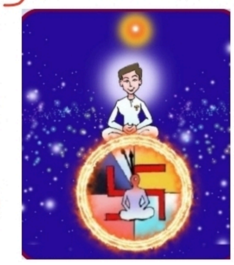

यह रमणीक ज्ञान है। रमणीक अनुभव स्वत: ही सुस्ती को भगा देता है। यह तो कई कहते हैं ना — वैसे नींद नहीं आयेगी, लेकिन योग में नींद अवश्य आयेगी। यह क्यों होता है? ऐसी बात नहीं कि थकावट है, लेकिन रमणीक रीति से और नैचुरल रूप से बुद्धि को सीट पर सेट नहीं करते हो। तो सिर्फ एक रूप से नहीं, लेकिन वैरायटी रूप से सेट करो। वही चीज़ अगर वैराइटी रूप से परिवर्तन कर यूज़ करते हैं तो दिल खुश होता है। चाहे बढ़िया चीज़ हो लेकिन अगर एक ही चीज़ बार-बार खाते रहो, देखते रहो तो क्या होगा? ऐसे ही कभी बीजरूप बनो, कभी लाइट-हाऊस के रूप में, कभी माइट-हाऊस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। जो भिन्न-भिन्न टाइटल मिलते हैं, वह भिन्न-भिन्न टाइटल रोज़ अनुभव करो। कभी नूरे रत्न बन बाप के नयनों में समाया हूँ — इस स्वरूप की अनुभूति करो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन... भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी अनुभव करो तो रमणीकता आयेगी। **बापदादा रोज़ मुरली में भिन्न-भिन्न टाइटल देते हैं, क्यों देते हैं? उसी सीट पर सेट हो जाओ और सिर्फ बीच-बीच में चेक करो।**

Automatically
Problem is here
Practicle Example
12/11/25

8.2.7. खुशी के प्वॉइन्टस का मनन करो :

रोज़ अमृतवेले दिलखुश मिठाई खाते हो? **जो रोज़ अमृतवेले दिलखुश मिठाई खाते हैं वो स्वयं भी सारा दिन खुश रहते हैं** और दूसरे भी उनको देख

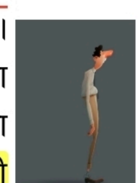

खुश होते हैं। यह ऐसी खुराक है जो कोई भी परिस्थिति आ जाये, लेकिन यह दिलखुश खुराक परिस्थिति को छोटा बना देती है, पहाड़ को रूई बना देती है। इतनी ताकत है इस खुराक में! जैसे शरीर के हिसाब से जो भी तन्दरुस्त वा शक्तिशाली होगा वह हर परिस्थिति को सहज पार करेगा और जो कमज़ोर होगा वह छोटी-सी बात में भी घबरा जायेगा। कमज़ोर के आगे परिस्थिति बड़ी हो जाती है और शक्तिशाली के आगे परिस्थिति पहाड़ से रूई बन जाती है। तो रोज़ दिलखुश मिठाई खाना माना सदा दिलखुश रहें। यह अलौकिक खुशी के दिन कितने थोड़े हैं! देवताई खुशी और ब्राह्मणों की खुशी में भी फ़रक है। यह ब्राह्मण-जीवन की परमात्म-खुशी, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति देवताई जीवन में भी नहीं होगी। इसलिए इस खुशी को जितना चाहे मनाओ। रोज़ समझो — आज खुशी मनाने का दिन है। उड़ती कला अभी है, फिर तो जितना पाया उतना खाते रहेंगे। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम दिलखुश मिठाई खाने वाले हैं और दूसरों को खिलाने वाले हैं क्योंकि जितना देंगे उतना और बढ़ती जायेगी। देखो, खुशी का चेहरा सबको अच्छा लगता है और कोई दु:ख-अशान्ति में घबराया हुआ चेहरा हो तो अच्छा नहीं लगेगा ना! जब दूसरों का अच्छा नहीं लगेगा तो अपना भी नहीं लगना चाहिए। तो सदैव खुशी के चेहरे से सेवा करते रहो।

So, Don't waste it... Utilize it wisely...

Mind very well...

13/11/25

रूप बसन्त

विशाल नगरी में महाराज चन्द्रसेन की दो रानियाँ थीं। एक सुनीति जो बहुत ही भक्ति-भाव वाली थी, दूसरी कनकलता जो कि बहुत ही अभिमानी और अपनी ही मनमानी करने और कराने वाली थी। रानी सुनीति के दो बेटे थे - रूप कुंवर और बसंत कुंवर। दोनों ही बेटे बहुत ही एकाग्रता से राजविद्या पढ़ते थे। दूसरी रानी कनकलता का बेटा मान कुंवर बहुत ही उदण्ड और शरारती था। वह पढ़ाई पढ़ने की बजाए अपने मित्रों के साथ नगर में सबको परेशान कर अपना रोब जमाने निकल पड़ता था। छोटी-सी बीमारी में सुनीति रानी की मृत्यु के बाद रानी कनकलता ने दांवपेंच लगाकर दोनों कुंवरों को देश निकाला दिलवा दिया। राज्य से बाहर निकलने के बाद बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को समझाया कि हमें किसी से भी यह नहीं कहना है कि हम महाराजा चन्द्रसेन के बच्चे राजकुमार हैं क्योंकि ऐसा करने से अपने बाप का नाम बदनाम होगा।

ये दोनों भाई जहाँ भी काम करने जाते तो कोमल हाथों में छाले पड़ जाते थे पर फिर भी सबकुछ चुपचाप सह लेते थे। वे जहाँ-जहाँ काम करते वहाँ-वहाँ दोनों के गुण, बोलचाल, रॉयल्टी, व्यवहार आदि को देख सब यही कहते कि ये कोई साधारण लड़के नहीं लगते हैं, ये तो जैसे राजकुमार लगते हैं। कार्य कराने वाले कभी-कभी उनको अपमानित भी करते थे, ज्यादा काम भी कराते थे परन्तु फिर भी दोनों ही कुंवर सदा अपकार करने वालों पर भी उपकार करते थे। वे कभी किसी का काम बिगाड़ते नहीं थे।

थोड़ा धन भी वे जरूरतमंदों को दान अवश्य करते थे। कभी भोजन करने बैठे और कोई मांगने वाला आ जाता तो जिसके घर पर काम करते थे वह उनको भगाने की कोशिश करता था लेकिन रूप-बसंत खड़े होकर अपना

भोजन उनको दे देते थे। आसपास रहने वालों की समस्याओं को सुनकर उन्हें कुछ न कुछ सुझाव देते थे और अपनी तरफ से भी कुछ मदद अवश्य करते थे। पूजा-पाठ आदि भी करते थे। जिस भी गाँव में जाते थे वहाँ के लोग उन्हों के पास अपनी समस्याओं को लेकर स्वत: ही आते थे।

एक बार उन्हें लगा कि हम छोटे-छोटे गाँवों में काम करते हैं, इससे अच्छा है कि हम किसी बड़े नगर में जाकर काम करें। यह सोचकर दोनों भाई नगर की ओर चल दिये। चलते-चलते घोर जंगल आया और रात हो गई। उन्होंने सोचा कि रातभर यहीं ठहर जाते हैं। रात के चार प्रहरों में से दो प्रहर एक भाई पहरा देगा और अगले दो प्रहर दूसरा भाई पहरा देगा, ऐसा निश्चय किया गया। सबसे पहले बड़े भाई रूप कुंवर ने छोटे भाई बसंत कुंवर को सुला दिया। दो प्रहर पूरे होने पर भी बड़े भाई की, छोटे को जगाने की इच्छा नहीं हुई लेकिन तीन प्रहर पूरे होते-होते अचानक बसन्त कुंवर की आंखें खुल गयीं। आसमान में तारे देखकर उसने कहा, भैया, आपने मुझे तीन प्रहर सोने दिया। अब आप आराम से सो जाइये। दिनभर चलने और तीन प्रहर जागरण की थकान के कारण रूप कुंवर गहरी नींद में सो गया। बसंत कुंवर जाग रहा था। उस समय पेड़ पर तोता-मैना आपस में बात कर रहे थे कि इस पेड़ पर एक साल में सिर्फ एक ही फल पकता है लेकिन यह फल ऐसा है कि जो इस फल को तोड़ेगा उसे विषैला नाग डसेगा और जो उसे खायेगा वह सुबह होते ही महाराजा बन जायेगा। लेकिन महाराजा बनते ही वह अपनी पुरानी याददाश्त भूल जायेगा। सिर्फ संस्कार इमर्ज रहेंगे। जब उसे कोई फिर से याद दिलायेगा तब ही उसे पुरानी स्मृति आयेगी। इसलिए आज तक कई लोगों ने यह फल खाने की कोशिश की लेकिन उन्हें विषैला नाग डस गया। तोता-मैना की ये बातें सुनकर बसंत कुंवर के मन में आया कि हम तो दोनों भाई हैं। रूप कुंवर ने तो ये बातें सुनी नहीं हैं तो मैं ऐसा करूं कि इस फल को तोड़कर बड़े भाई को खिला देता हूँ ताकि वह महाराजा बन जाये क्योंकि उनमें मेरे से भी ज्यादा

प्रजापालन के गुण हैं। वह प्रजा को बहुत सुखी रखेंगे (त्याग भावना)।

वह खुद फल खाकर महाराजा बन सकता था फिर भी उसने फल तोड़कर तुरन्त ही रूपकुंवर को जगाकर कहा, ''भैया, इस पेड़ पर बहुत ही मीठे फल थे। मैंने तो बहुत खाये, अब एक ही बचा है, आप इसे खा लो।'' ऐसा कहकर रूप कुंवर को फल खिला दिया। थोड़ी ही देर में एक विषैला नाग आया और बसंत कुंवर को डसकर एक पल में वहाँ से चला गया। बसंत कुंवर बेहोश हो गया। तब रूप कुंवर उसको उठाकर पास ही बहती हुई एक नदी के किनारे पर ले गया और दंश वाले भाग पर थोड़ा चीरा लगाकर पांव को बहते पानी में रखा ताकि खून के साथ जहर भी पानी में बह जाये। थोड़ा-सा उजियारा होने पर उसे थोड़ी ही दूरी पर नगर दिखाई दिया। वह किसी वैद्य को बुलाने के लिए उस ओर दौड़ पड़ा।

उस नगर के राजा को कोई वारिस नहीं था। राजा की मृत्यु के बाद राजपुरोहित ने कहा कि पूरे राज्य के लोग नगर चौक में इकट्ठे हो जायें और हथिनी जिस पर भी जल-कलष रखेगी वही इस राज्य का नया राजा बनेगा। उस अनुसार पूरे ही राज्य के लोग नगर-चौक में सुबह होने से पूर्व ही पहुँच गये।

दूसरी तरफ, रूप कुंवर वैद्य को ढूंढने जब राज्य में गया तो हर घर खाली था। वह जब नगर-चौक में पहुँचकर वैद्य से मिलकर उसको अपने साथ चलने की प्रार्थना कर ही रहा था कि उतने में ही हथिनी घूमती-घूमती उसी स्थान पर आकर ठहर गई और उसने रूप कुंवर के सिर पर ही जल-कलष रख दिया। कलष का जल सिर पर पड़ते ही रूप कुंवर पिछली याददाश्त भूल गया। सिर्फ राजाई संस्कार इमर्ज रहे। साधारण रूप वाला रूप कुंवर जो कि मूल रूप में राजाई कुल का ही बेटा था, अब सचमुच राजा बन गया। राज्याभिषेक के बाद जब उसने राज कारोबार संभाला तो पूरे ही राज्य में सुख-शान्ति का साम्राज्य

फैल गया। वह प्रजा को सब प्रकार की सुविधायें देने का ध्यान रखता। रात को और दिन में भी नगरचर्या करके लोगों के दु:ख-दर्द को जान लेता और फिर राज दरबार में चर्चा करके समाधान करता। उसका प्रजा के प्रति इतना वात्सल्य था कि थोड़े ही समय में वह प्रजाप्रिय राजा बन गया। उधर बसंत कुंवर नदी के बहाव में बहता हुआ उसी नगर के घाट के पास पहुँचा। तब कपड़े धोते हुए धोबी ने उसे बचा लिया और प्रयास करके उसे होश में ले आया। ठीक होने पर बसंत कुंवर ने अपने भाई रूप कुंवर को ढूंढने की कोशिश की। उसे पता चला कि वह इसी राज्य का महाराजा है लेकिन उसे यह भी पता था (पक्षी के कहने अनुसार) कि रूप कुंवर सारी ही याददाश्त भूल गया होगा और मैं जब याद दिलाऊंगा तभी उसे याद आयेगा। इसलिए वह युक्ति रचकर राज्य दरबार में पहुँच गया और वहाँ जाकर एक गीत सुनाया जिसमें अपनी पूरी जीवन कहानी सुना दी। गीत सुनते-सुनते महाराज रूप कुंवर को अपनी पुरानी स्मृति वापस इमर्ज हो गयी। और वह अपने भाई बसंत कुंवर को पहचान गया। बाद में उसे अपना मंत्री बना दिया और दोनों ही भाइयों ने बड़े ही सुचारू रूप से राज्य कारोबार चलाया।

आध्यात्मिक भाव – बाबा हम बच्चों को कहते हैं कि ''बच्चे, आप अभी वनवाह में हो इसलिए रहो साधारण रूप में लेकिन आपके बोलचाल, व्यवहार आदि से सभी को यह लगे कि ये कोई साधारण आत्मा नहीं हैं। ये तो ईश्वरीय कुल या दैवी कुल की आत्मायें हैं। जैसे बसंत कुंवर ने सारी बातों का पता होते भी रूप कुंवर को महाराजा बनाया उसी तरह तुम बच्चों में भी त्याग की भावना होनी चाहिए। जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे तब तुम पुरानी याददाश्त, जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है, वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारों में इमर्ज रहेंगे। कल्प के अन्त में मैं आकर तुम बच्चों को फिर से आदि-मध्य और अन्त का ज्ञान दूँगा तब फिर से तुम्हें पुरानी स्मृति इमर्ज हो जायेगी।''